

है वि. विपरीत, उल्टा जैसे- विलोमी रीति (उलटी रीति)।

विलोल वि. (तत्.) 1. दोलायान, काँपता हुआ, कंपायमान, अस्थिर, डोलने वाला, चंचल 2. ढीला, विपर्ययस्व, बिखरे हुए (बाल आदि)।

विलोलित वि. (तत्.) जिसे हिलाया-डुलाया गया हो, विक्षुब्ध किया हुआ।

विलोलिनी वि. (तत्.) चंचल।

विलोहित वि. (तत्.) 1. गहरे लाल रंग वाला 2. गाढ़ा लाल रंग पुं. 1. रुद्र, शिव 2 एक नरक 3. एक तरह का प्याज।

विल्व पुं. (तत्.) एक काँटेदार ऊँचा औषधीय पेड़ जिसमें सामान्यतः तीन-तीन पत्तियों के समुच्चय होते हैं, इसका फल लेसदार तथा गर्मी का शमन करने वाला होता है, इसके फल, पत्ते, गूदा और लकड़ी सभी में औषधीय गुण होते हैं।

विल्व-पत्र पुं. (तत्.) बेल के पेड़ पर लगने वाले पत्ते, जिसके प्रत्येक पत्रवृत्त में सामान्यतः तीन-तीन पत्तियाँ निकलती हैं, विल्व-पत्र श्रावण मास तथा महाशिव रात्रि पर भगवान शिव को अर्पित किए जाते हैं।

विल्वमंगल पुं. (तत्.) महाकवि सूरदास का नेत्र ज्योति जाने से पहले का नाम।

विव वि. (तत्.) 1. दूसरा 2. दो।

विवक्षा स्त्री. (तत्.) 1. कोई अर्थ स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त न होने पर उसमें भावना या तात्पर्य का निहित होना, तात्पर्य, निहितार्थ 2. अप्रत्यक्ष रूप से होने वाला संकेत, छिपा अर्थ 3. फल अथवा परिणाम के रूप में या आनुषंगिक रूप से होने वाली कोई युक्तियुक्त बात implication

विवक्षित वि. (तत्.) 1. कहे जाने अथवा बोले जाने के लिए अभिप्रेत 2. अर्थयुक्त, अभिप्रेत, उद्दिष्ट 3. अभिलषित, इच्छित 4. प्रिय।

विवत्स वि. (तत्.) ऐसा व्यक्ति जिसके कोई संतान न हो, संतानहीन, वंशहीन।

विवत्सा स्त्री. (तत्.) नर संतान से हीन गाय, वह गाय जिसे बछड़ा न हो।

विवदना अ.क्रि. (तद्.) 1. तर्क-वितर्क करना, बहस करना, विवाद करना 2. झगड़ा करना।

विवर पुं. (तत्.) 1. जमीन, दीवार अथवा वृक्ष में बन जाने वाला खोखला स्थान, दरार, छिद्र, गड्ढा, बिल, रंध, खोखलापन 2. अंतस्थान, अंतराल 3. एकांत स्थान 4. दोष, त्रुटि, ऐब, कमी 5. विच्छेद घाव 6. 'नौ' की संख्या।

विवरण पुं. (तत्.) 1. किसी व्यक्ति, स्थान वस्तु आदि के बारे में व्यवस्थित व्यौरा, वर्णनात्मक उल्लेख 2. अनावृत करना, खुला छोड़ना 3. विवृति, व्याख्या, टीका, भाष्य, वृत्ति 4. प्रदर्शन, अभिव्यंजन।

विवर्जन पुं. (तत्.) छोड़ना, निकाल देना, परित्याग करना प्रशा., शिक्षा. किसी व्यक्ति के ऊपर कहीं प्रवेश करने, कोई परीक्षा देने या किसी और कार्यवाई में भाग लेने पर लगी रोक पर्या. वारण।

विवर्ण वि. (तत्.) जिसका वर्ण/रंग खराब हो गया हो, 1. वर्णहीन, बदरंग, बेआब, श्रीहत 2. नीच, संकर जाति का, अशिक्षित, मूर्ख पुं. वह जो जाति में न हो, नीच जाति का आदमी साहि. एक भाव जिसमें भय आदि के कारण चेहरे का रंग बदल जाता है पर्या. वैवर्ण्य।

विवर्णता स्त्री. (तत्.) 1. रंग खराब हो जाना, बदरंगीयता 2. श्रीहीनता, कांतिहीनता 3. चेहरे का रंग उड़ जाना।

विवर्त पुं. (तत्.) 1. गोल-गोल चक्कर काटना, चारों ओर घूमना, भ्रम 2. आगे की ओर लुढ़कना 3. पीछे की ओर लुढ़कना, लौटना 4. नृत्य 5. बदलना, सुधारना, रूप में परिवर्तन, बदली हुयी दशा या अवस्था 6. भ्रम, धोखा 7. किसी वस्तु का किसी अन्य रूप में प्रतीत होना जैसे- अंधकार में रस्सी में साँप की प्रतीति होना 8. ढेर, समुच्चय, संग्रह।

विवर्तन पुं. (तत्.) 1. चक्कर लगाना, घूमना, घूम जाना, फिरना 2. आदरपूर्वक प्रणाम 3. अनेक